शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 1, अक्टूबर-दिसंबर 2023
Online Available : http://shodhbodh.com/

शिवमूर्ति के कथा साहित्य में भाषा शैली

सरबजीत कौर, सहायक आचार्य, हिंदी
खालसा त्रिशताब्दी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
रतिया, जिला फतेहाबाद, हरियाणा
ईमेल – sarb51336@gmail.com

सारांश –

कथा साहित्य हर भाषा के साहित्य की सबसे प्रिय विधा रही है। शिवमूर्ति भी इस विधा के लेखन में हिंदी साहित्यकारों में आगे रहे हैं। उन्होंने अपने कथा साहित्य में एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। उनके साहित्य का महत्वपूर्ण पहलू कहानी विधा है। अन्य साहित्यकारों के समान उन्होंने भी अपने कथा साहित्य का कथ्य सामाजिक धरातल पर उकेरा है। शिवमूर्ति ने ग्रामीण जीवन, सामाजिक ताना बाना, पारिवारिक जीवन, आदि को ही अपने साहित्य का आधार बनाया है।

मुख्य शब्द – साहित्यकार, कहानी, भाषा शैली, कथा साहित्य।

प्रस्तावना –

शिवमूर्ति अपने परिवेश, प्रकृति और जिनके बीच उनके उठना बैठना होता है उनके क्रियाकलापों तथा मनोदशाओं से इतना परिचित हैं बल्कि कहिये इतना तादात्म्य स्थापित कर चुके हैं कि इन सबके चित्रण में सूक्ष्म से सूक्ष्म चित्रण भी छूट नहीं पाता। उनके साहित्य में ग्रामीण जीवन का जीता जागता चित्र अपनी समस्त बारीकियों के साथ उपस्थित होता है। ऐसे जीवन धार्मिक, साहित्यकार के व्यक्तित्व और कृतित्व के प्रति चिंतन मनन और गहराइयों के साथ उनका अवलोकन अपेक्षित है। किसी भी साहित्यकार का साहित्य न केवल उसके स्वयं के जीवन की अनुकृति होता है वरन् उसके समकालीन सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, नैतिक, प्राकृतिक परिवेश के समष्टिगत वातावरण की भी अभिव्यक्ति होता है। निश्चित ही शिवमूर्ति के कथा साहित्य में उनके आसपास के वातावरण का चित्रण सहज ही परिलक्षित होता है जो उनकी रचनाओं में देखने को मिलता है। उनके व्यक्तित्व एवं जीवन की संघर्ष रेखा के द्वारा उनकी सामाजिक चेतना को जाना जा सकता है क्योंकि किसी भी साहित्यकार का व्यक्तित्व एवं जीवन संघर्ष उसके आंतरिक और बाह्य कृतित्व की समग्र अनुकृति होता है। व्यक्तित्व और जीवन संघर्ष के माध्यम से हम किसी भी साहित्यकार के कार्य व्यवहार को, उसके दृष्टिकोण को, जीवन परिस्थितियों को, आदर्शों को, उसकी भावनाओं

शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 1, अक्टूबर-दिसंबर 2023
Online Available : http://shodhbodh.com/

को सहजता से जान पाते हैं। प्रसिद्ध साहित्यकार शिवमूर्ति का हिन्दी साहित्य जगत में विशेष योगदान है। समकालीन कथा साहित्यकारों में इनका विशेष और महत्वपूर्ण स्थान है।

शैलीगत प्रयोग –

शिल्प का अर्थ हाथ से कोई चीज बनाकर तैयार करने का काम, दस्तकारी, कारीगरी, कला संबंधी, व्यवसाय आदि से है। ''शिल्प विधि के लिए अंग्रेजी में टेकनीक शब्द का प्रयोग होता है। शिल्पविधि से तात्पर्य किसी कृति के निर्माण की उन सारी प्रक्रियाओं तथा रचना पद्धतियों से है जिनके माध्यम से शिल्पकार या रचनाकार अपनी अमूर्त जीवनानुभूतियों, मनः प्रभावों तथा विचारों और भावों को मूर्त रूप देकर अधिकाधिक संवेद्य और सौंदर्यमूलक बनाता है।''[1]

शिवमूर्ति शिल्प के प्रति कतई आग्रहवान नहीं है। अपने साहित्य में वे शिल्प की अपेक्षा आमजनता की भावनाओं, आशा, आकाक्षाओं, को महत्व देते हैं।

फिर भी उनकी शिल्प–संबंधी धारणा को देखने पर पता चलता है कि वे कला या साहित्य को जीवन की तरह सहज रूप में देखना पसन्द करते हैं। साधारण जनता की भाषा अर्थात् सरल भाषा को साहित्य के लिए अधिक उपयोगी मानते हैं। मुद्राराक्षस के अनुसार ''बिना अनुभव के अच्छा लेखन संभव नहीं है। बिना किसी शक के शिवमूर्ति के कथानक उनके अपने अनुभवों से उपजे हुए लगते हैं। बिना पूरा पढ़े हुए किसी भी रचना की कथा और उसकी भाषा पर टिप्पणी करना ठीक नहीं है। जितना पढ़ा है उसके आधार पर उनकी भाषा उनके चरित्रों की ही बोली है। एक अच्छे लेखक की छवि है। एक ऐसा लेखक जो अच्छा और सार्थक लिखता हो।''[2]

ग्राम्य–केंद्रित कथाकार होने के कारण शिवमूर्ति ने अपने कथा–साहित्य में प्रेमचन्द की तरह बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है। अपनी कथा भाषा को जीवंत और सर्वव्यापी बनाने के लिए उन्होंने भारतीय ग्राम्य–जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से शब्द, मुहावरें, लोकोक्तियाँ, कहावतों का चयन किया है। साहित्य की दृष्टि से आदर्श भाषा के लिए उक्त तरह के समिश्रण की आवश्यकता होती है। तभी वह साहित्यकार के भाव तथा विचारों का माध्यम बन सकती है। इस दृष्टि से शिवमूर्ति की कहानियों की भाषा स्थानीय रंग से युक्त, सहज, सरल और संप्रेषणीय है। दूधनाथ सिंह के अनुसार ''कहानी में नए प्रयोगों को स्थापित करना और पाठकों और आलोचकों से उसकी स्वीकृति लेना एक अत्यंत कठिन काम है। शिवमूर्ति क्योंकि अपनी कहानियों में कोई प्रयोग नहीं करते, शिल्प भाषा और कथ्य के स्तर पर भी वह कोई नई चमकदार और अनहोनी बात नहीं कहते, ठीक प्रेमचंद की तरह ही, अतः उनकी स्वीकृति स्वाभाविक है।''[3] शिवमूर्ति की कहानी–साहित्य के भाषा–शिल्प में शब्द योजना, कहावतें,

शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 1, अक्टूबर-दिसंबर 2023
Online Available : http://shodhbodh.com/

मुहावरों, सूक्तियों, भाषा और शैलियों के विविध रूप आदि उपशीर्षकों में रखकर विश्लेषित किया गया है।

यह पहले भी कहा जा चुका है कि शिवमूर्ति शैली–शिल्प के प्रति बहुत ही कम महत्व देते हैं। परन्तु जब कहने या प्रस्तुति का ढ़ंग शैली कहलाती है और हर श्रेष्ठ साहित्यकार की पहचान की एक कसौटी उसकी शैली भी होती है, तब शिवमूर्ति के उपन्यासों में भी शिल्पगत अध्ययन के पश्चात् ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने अनेक परंपरागत और नवीन शैलियों का प्रयोग किया है। यहाँ उनके उपन्यासों में प्रयुक्त विभिन्न शैलियों का अध्ययन प्रस्तुत है।

वर्णनात्मक शैली –

कहानी हो या उपन्यास, सर्वाधिक मात्रा में प्रयुक्त होने वाली शैली के रूप में वर्णनात्मक शैली प्रसिद्ध है। आमतौर पर ऐसा कहा जाता है कि जहाँ कहने का कोई अन्य तरीका काम न आए, वहाँ वर्णनात्मक ढ़ंग से काम लिया जाता है। जीवन और जगत से संबद्ध हर बात इस शैली में कही जा सकती है। इसमें लेखक को पूरी आजादी होती है। परन्तु रोचकता इसकी अनिवार्य शर्त है। रोचकता के अभाव में सब वर्णन सतही बन सकता है। जहाँ तक उपन्यासकार शिवमूर्ति का प्रश्न है, उन्होंने वर्णनात्मक शैली का सफल प्रयोग किया है। उनकी वर्णनात्मकता भारतीय ग्राम–जीवन के प्रति न केवल कौतूहल पैदा करती है बल्कि वहाँ की विसंगतियाँ हर संवेदनशील पाठक को सोचने पर विवश कर देती है। ''कार्तिक एकादशी की शाम पहलवानिन चना–दाल की पूड़ी और सूरन की सब्जी बनाती है। साथ में रसियाव यानी मीठा चावल। उनकी सास के जमाने से चली आ रही है यह परम्परा।''[4] यह उदाहरण 'आखिरी छलाँग' उपन्यास से लिया गया है। इस प्रकार शिवमूर्ति के इस उपन्यास में वर्णनात्मक शैली का एक सुन्दर उदाहरण देखने को मिला। जो पाठकों को बाँधे रखता है।

विश्लेषणात्मक शैली–

विश्लेषणात्मक शैली में तर्क की प्रधानता होती है। इसके माध्यम से उपन्यास की कथा में प्रयुक्त घटना, प्रसंग, पात्र, संवाद आदि का वैचारिक स्तर पर विवेचन विश्लेषण किया जाता है। विश्लेषण में लेखक के विचार भी आते हैं। अर्थात् लेखक स्वयं अथवा अपने किसी पात्र द्वारा विश्लेषण करता है।

इसकी सहायता से पात्रों की विशेषताएँ, चरित्रगत अच्छाई–बुराई आदि पर प्रकाश डाला जाता है। आलोच्य उपन्यासकार शिवमूर्ति ने प्रस्तुत शैली का भी अत्यंत सफलतापूर्वक

शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 1, अक्टूबर-दिसंबर 2023
Online Available : http://shodhbodh.com/

प्रयोग किया है। त्रिशुल उपन्यास में दिये गये विश्लेषणात्मक शैली का उदाहरण प्रस्तुत है– ''दूसरी ओर गाँव के अधिकांश लोग यह मानते हैं कि रामभक्त पार्टी वाले लोग धार्मिक उन्माद फैला रहे हैं फिर भी चूँकि वे हिन्दू धर्म के गौरव की बात करते हैं तो हमारी छाती फूलती है और उस पार्टी में ज्यादातर हमारे नाते–रिश्तेदार लोग ही हैं। इसलिए उनके प्रति दूरी या नफरत नहीं पैदा होती। इस भावना को पकड़ने के लिए आप इस पर विचार करें कि द्रोण एकलव्य को क्यों नही अपना सकें। भीष्म दुर्योधन को क्यों नहीं त्याग सके ?''[5]

आत्मकथात्मक शैली –

आत्मकथात्मक शैली में उपन्यासकार ''मै'' शैली में कथा प्रस्तुत करता है। मानो कोई आत्मवृत्त या आत्मचरित्र लिख रहा हो। यह शैली पाठकों से आत्मीयता और कथ्य के प्रति विश्वास पैदा करने में समर्थ होती है, क्योंकि इसके जरिये लेखक पाठकों से सीधे संवाद करता है। शिवमूर्ति की यह एक प्रिय शैली है। यही कारण है कि कहानियों की तरह उपन्यासों में भी उन्होंने आत्मकथात्मक शैली का सफल प्रयोग किया है। शिवमूर्ति के उपन्यास आखिरी छलाँग इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। वैसे तो यह मुख्यतया डायरी शैली में लिखा गया उपन्यास है किन्तु डायरी के जरिये पात्र से कथा प्रस्तुत कराते हैं।

अतः डायरी और आत्मकथात्मक शैली का यह अनोखा समन्वय हुआ है। इस उपन्यास से आत्मकथात्मक शैली का एक उदाहरण प्रस्तुत है – ''आज के दिन से ही गन्ना चूसने या पेरने की पारम्परिक शुरूआत होती है। दलिद्दर को भी गन्ने से पीटकर भगाते हैं। इसलिए हर गृहिणी को आज के दिन गन्ने की जरूरत पड़ती है। जरूरी नहीं कि हर किसान हर साल गन्ना बोयें। बहुत से भूमिहीन परिवार भी है गाँव में। दलिद्दर सभी को भगाना है। मुँह सभी का मीठा होना है। इसलिए हर गन्ना किसान अपने ऐसे पड़ोसियों के घर गन्ना भेजना अपना धरम समझता है जिन्होंने गन्ना नहीं बोया है। सराई सिंह जब तक जिंदा थे, पूरे गाँव के गन्ना विहीन परिवारों के घर–परिवार के सदस्यों की संख्या के बराबर गन्ना भिजवाते थे।''[6]

संवादात्मक शैली –

संवाद से संवादात्मकता है। संवादों से कथ्य प्राणवान बनता है यही कारण है कि आजकल कहानी उपन्यास आदि गद्य विधाओं में प्रस्तुत शैली का प्रयोग कम अधिक मात्रा में होता है। उपन्यास में लंबे संवाद भी चल जाते हैं, क्योंकि उसे नाटक की भाँति मंच पर प्रस्तुत करना नहीं होता। उपन्यासकार शिवमूर्ति ने प्रयोग के नाम पर न किया हो, किन्तु संवादात्मक शैली का प्रयोग अवश्य किया है और उसमें बड़ी हद तक सफलता भी हासिल की है।

शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 1, अक्टूबर-दिसंबर 2023
Online Available : http://shodhbodh.com/

उनके तीनों उपन्यासों में ऐसे उदाहरण प्रस्तुत होते हैं। किन्तु उनके उपन्यासों में ग्रामीण जीवन के पात्र प्रमुख हैं। ग्रामीण पात्रों के संवादात्मक शैली का एक उदाहरण देखिए –

''एक डालर कितना होता है ?

पचास के नोट से जरा सा कम समझो।

चौबीस डालर माने हजार रूपये से ऊपर।

रोज हजार रूपये ? ऐसा कहीं हो सकता है ?

बिल्कुल, ऐसा ही। खेलावन जोर देकर कहते हैं – तब जाकर वहाँ के किसानों को पोसता है। अपने यहाँ किसानों के बारे में इस तरह सोचन` वाला कौन है ?''[7] यह किस्सा आखिरी छलाँग उपन्यास से लिया गया है जिसमें अमेरिका के डालर की चर्चा गाँव के किसान करते हैं।

व्यंग्यात्मक शैली–

व्यंग्यात्मक शैली या शिल्प शिवमूर्ति की कथा साहित्य की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। शिवमूर्ति जब समाज में व्याप्त विसंगतियों, विरूपताओं, सड़ांध स्थितियों तथा बुराइयों पर आघात कर उसे मिटाना चाहते हैं, तब व्यंग्यात्मक शैली की सहायता लेते हैं। उनकी कहानियाँ तो व्यंग्यात्मकता से समृद्ध है ही उपन्यासों में भी इसकी कमी नहीं है। इसका एक उदाहरण देखिए जब शहर में दंगे व आगजनी होती है तब एक मुस्लिम दरजी की दुकान जला दी जाती और बजरंग बली की मूर्ति रातों–रात स्थापित हो जाती है।

''लौटने पर पत्नी पूछती है, ''कुछ पता चला, आग किसने लगाई थी?

हनुमान जी ने। में धीरे से कहता हूँ। लेकिन खबरदार किसी से कहना नहीं। देवता का मामला है।''

पत्नी अवाक् रह जाती है।

इसी तरह में अवाक रह गया था, जब एक बार मेरे एक ईसाई मित्र ने हँसते हुए पूछा था– कैसा है आपका धर्म जिसमें साझे की पत्नी को दाँव पर लगाने वाला 'धर्मराज' होता है। गर्भवती पत्नी को जंगल में निष्कासित कर देने वाला भगवान कहा जाता है।''[8]

शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 1, अक्टूबर-दिसंबर 2023
Online Available : http://shodhbodh.com/

कहानियों की भाँति शिवमूर्ति ने लोककथात्मक शैली, डायरी शैली, पत्र शैली और फ्लैश बैक शैली (पूर्व दीप्ति) का प्रयोग अपनी रचना में बहुत ही अच्छे ढ़ंग से किया और शिल्पगत विशेषता की अधूरेपन को दूर करने कोशिश की।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि शिवमूर्ति मानवतावाद के प्रति आस्था रखने वाले एक प्रगतिशील उपन्यासकार हैं। उनके तीनों उपन्यास तर्पण, त्रिशूल और आखिरी छलाँग कथ्य के साथ–साथ शिल्प की दृष्टि से भी विशिष्ट हैं। कहानियों की भाँति अपने उपन्यासों के कलात्मक पक्ष को परिपूर्ण करने के लिए शिवमूर्ति ने भाषा और शैली दोनों का सहज किन्तु प्रभावशाली प्रयोग किया है। जहाँ तक भाषा का प्रश्न है, उनके दोनों उपन्यासों की भाषा सहज, सरल और आँचलिकता के पुट से संप्रेषणीय भाषा है। पात्रानुकूलता, चित्रात्मकता, आत्मकथात्मक, संवादात्मक और व्यंग्यात्मकता आदि विशेषताएँ उनकी भाषा को विशिष्टता प्रदान करती हैं। जहाँ तक शैली का सम्बन्ध है, शिवमूर्ति ने अपने तीनों उपन्यासों में पारंपरिक एवं नवीन दोनों तरह की शैलियों का प्रभावी प्रयोग किया है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. जवाहर सिंह, हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों की शिल्प, विधि, नेशनल पब्लिशिंग 23 दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण : 1986, पृ.सं. 01
2. लमही, संपादक ऋत्विक राय, अंक–20, अक्टूबर–दिसंबर 2012, पृ.सं. 241
3. वहीं, पृ.सं. 243
4. वही, पृ.सं. 92
5. शिवमूर्ति, त्रिशूल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण : 2012, पृ.सं. 59
6. नया ज्ञानोदय (संपादक) रविन्द्र कलिया, जनवरी 2008, पृ.सं. 79
7. वही, पृ.सं. 84
8. शिवमूर्ति, त्रिशूल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण : 2012, पृ.सं. 42